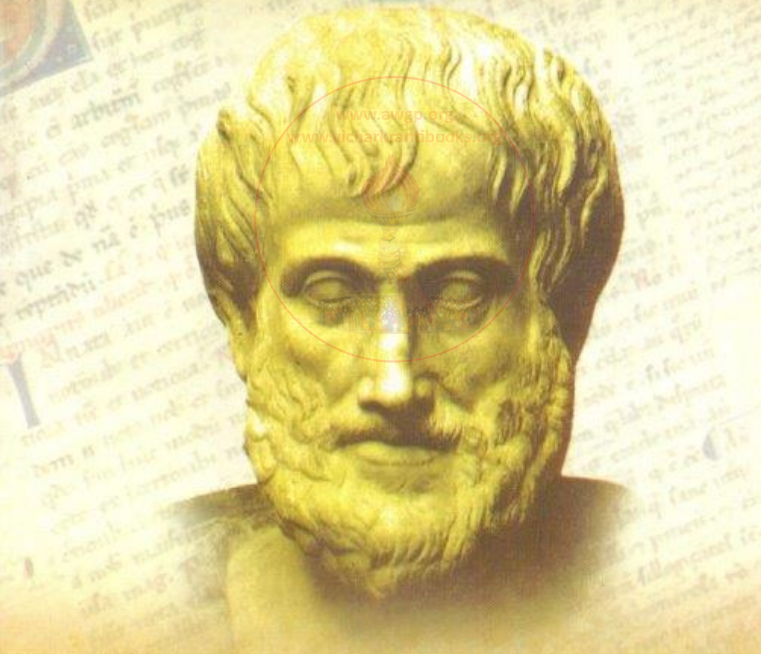
सेवा और सहिष्णुता के आदर्श

संत सुकरात



—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

सेवा और सहिष्णुता के आदर्श—संत सुकरात

ईसा मसीह के जन्म से भी चार सौ वर्ष पहले एथेन्स (यूनान) के न्यायालय में एक सत्तर वर्षीय वृद्ध मनुष्य खड़ा हुआ था। उसके ऊपर अभियोग लगाया गया था कि वह नवयुवकों को विपरीत उपदेश देकर गलत रास्ते पर ले जाता है। दूसरा अभियोग यह भी था कि उसने प्रजातंत्र के अधिकारियों के आदेश की अवहेलना की है। यह अभियुक्त और कोई नहीं, पश्चिमी संसार का अति प्राचीन दार्शनिक सुकरात था।

संसार में यह भी एक अनोखा दृश्य है कि जिन लोगों को आज दुनिया पूजती है, महान् संत और देवदूत मानती है, उन्हीं को एक समय 'बुद्धिमान्' और 'न्यायकर्ता' कहे जाने वाले लोगों ने अभियुक्त बनाया और कड़े से कड़ा दंड दिया। अन्यथा कौन कह सकता है कि सुकरात, ईसा, मार्टिन लूथर आदि किसी भी दृष्टि से 'अपराधी' या 'दोषी' थे। पर जिस प्रकार दुष्टों की दृष्टि में साधु व्यक्ति दोषी जान पड़ता है, जैसे हिरनाकुश को राम नाम लेने वाला प्रह्लाद शत्रु जान पड़ता था, उसी प्रकार ये महापुरुष भी कुछ व्यक्तियों को अपने सत्य-व्यवहार और न्याय-परायणता के कारण 'दोषी' जान पड़ते थे। आजकल भी कुछ राजनीतिक मतभेद के कारण गाँधी, कैनेडी, लूथर किंग जैसे लोक कल्याणकारी महामानवों को गोली से उड़ा दिया जाता है। पर अब यह कार्य खुली अदालत में धर्म, कानून तथा न्याय के नाम पर नहीं होता, वरन् जिन लोगों के स्वार्थ को उन महापुरुषों के सत्य का पक्ष ग्रहण करने से अपनी हानि जान पड़ती है, वे ही उनके प्राणों के ग्राहक हो जाते हैं।

इसीलिए जब सुकरात (जन्म ईसा से ४६६ वर्ष पूर्व) के अभियोगकर्ताओं ने नागरिकों को संबोधित करके यह कहा कि, आप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोग सावधान रहें और सुकरात के भाषण-जाल में न फँस जायें, तो सुकरात ने उत्तर दिया कि—"एथेन्स का प्रत्येक नागरिक जानता है कि मुझमें चाहे और कोई दोष हों, पर मैं असत्य-भाषी तो कदापि नहीं हूँ। हाँ, यदि उनका आशय यह है कि मेरा सत्य भाषण लोगों को आकर्षित कर लेता है और उसी को वे 'जाल' समझते हैं तो मैं इस आरोप को स्वीकार कर लूँगा। अनेक 'बुद्धिमान्' कहलाने वाले कहते हैं कि सुकरात आकाश के विषय में वितर्क करता है, पाताल की पड़ताल करता है और कुत्सित बात को समुचित सिद्ध कर देता है। उनका संकेत इन बातों से यह है कि मैं 'देवताओं' पर आस्था नहीं रखता। पर इस बात में किंचित भी सत्यांश नहीं। मैं कोई वैज्ञानिक नहीं हूँ और एक ऐसे विषय में काल्पनिक बातें कदापि नहीं करता, जिसकी मुझे कोई जानकारी नहीं।"

"फिर भी अभियोक्ता लोग और उनके सहकारी मुझे 'प्रज्ञावान्' (बुद्धिशाली) कहते हैं, तो इसका कोई कारण अवश्य होगा। मेरा तो अनुमान है कि मेरे एक मित्र 'काइरोफोन' ने 'डेलफाई' मंदिर के देवता से पूछा था कि—"क्या सुकरात से बढ़कर बुद्धिमान् कोई अन्य व्यक्ति है या नहीं ?" इस पर देवता ने देववाणी की, और मंदिर की पुजारिन ने उसका जो आशय बतलाया वह यही था कि देवता ने मुझे 'प्रज्ञावान्' बताया है। जब मैंने यह सुना तो बड़ा आश्चर्यचकित हुआ कि, मैं तो अपने को अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरे अंदर किसी प्रकार की 'प्रज्ञा' नहीं है। तब देवता का वास्तविक आशय क्या हो सकता है ? इसकी जाँच-पड़ताल करने के लिए मैं विद्वानों, राजनीतिज्ञों, कवियों, शिल्पकारों के पास यह जानने को गया कि उनमें से कोई अधिक प्रज्ञावान् है या नहीं ? पर सब जगह मुझे ढोल के अंदर पोल ही मिली। ये लोग अपने को 'प्रज्ञावान्' कहते अवश्य थे, पर दरअसल अपने पेशे की कुछ बातों को छोड़कर संसार का उनको कुछ भी ज्ञान न था।

"मैंने समझा कि, मैं इस 'अर्थ' में 'प्रज्ञावान्' कहा जा सकता हूँ कि मैं अपने 'अज्ञान' को जानता हूँ, जबकि वे लोग 'अज्ञानी' होते हुए भी अपने को 'प्रज्ञावान्' मानते थे और वैसा ही दावा करते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब मैंने उनकी इस झूठी 'प्रज्ञा' का भंडाफोड़ कर दिया तो वे सब मेरे शत्रु बन गये और उसी का परिणाम है कि आज मेरे ऊपर इस प्रकार का आरोप लगाया गया है।"

इतना कहकर सुकरात् ने बतलाया कि—"सत्य तो यह है कि केवल भगवान् ही 'प्रज्ञावान्' है। वे ही मेरे तथा अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियों के बीच इस तरह की परीक्षा उपस्थित करके यह दिखलाना चाहते हैं कि मनुष्य की 'प्रज्ञा' अत्यल्प तथा नाम मात्र की है। भगवान् ही मेरे नाम को निमित्त बनाकर एक दृष्टांत दे रहे हैं। इस प्रकार वे ही कह रहे हैं कि—"हे मनुष्यों! वही मनुष्य 'प्रज्ञावान्' है, जो सुकरात की तरह यह जानता है कि उसकी अपनी 'प्रज्ञा' का कोई मूल्य नहीं।"

भारतीय ऋषियों का आदर्श—

पाठक देख सकते हैं कि सुकरात ने ज्ञानी व्यक्ति का जो लक्षण बतलाया, वह हमारे ऋषि-मुनियों के सिद्धांतों से पूर्णरूप से मिलता हुआ है। हमारे यहाँ कहा गया है कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं। सामान्य रूप से ज्ञानी कहा जाने वाला व्यक्ति जितना जानता है, वह संपूर्ण ज्ञान-राशि की तुलना में एक घड़े में एक बूँद के समान भी नहीं है। जिनको 'महाज्ञानी' कहा जाता है, वे भी कभी यह नहीं कह सकते कि हमने पूर्ण ज्ञान को प्राप्त कर लिया है। उदाहरण के लिए सांख्य और वैशेषिक जैसे जगत् प्रसिद्ध दर्शनों के रचयिता भी शिल्प, संगीत, काव्य के विषय में अपने को निष्णात नहीं कह सकते। फिर अध्यात्म-ईश्वर, जीव, आत्मा, परलोक जैसे सर्वथा अप्रत्यक्ष और अव्यक्त विषय में तो कोई दावे के साथ कुछ कैसे कह सकता है ? इसलिए भारतीय ऋषि-मुनियों ने सब कुछ वर्णन कर देने के बाद भी कहा है—'नेति-नेति' ? अर्थात् जितना हम जानते थे उतना हमने बतला दिया, पर यह इस विषय की अंतिम सीमा नहीं है। इसके बाद भी जानने की बहुत-सी बातें हैं, जिनका पता हमको नहीं, पर संभव है कि अन्य किसी को हो, अथवा आगे चलकर जिनकी जानकारी हो सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुकरात ने भी अपने अभियोक्ताओं को उत्तर देते हुए यही कहा कि, मेरे ऊपर जो यह इलजाम लगाया गया है कि मैं जनता के बीच अपने को सबसे बड़ा ज्ञानी बतलाकर उनको अपने मनमाने सिद्धांतों का अनुयायी बना लेता हूँ, तो इसमें सत्य का तनिक भी अंश नहीं है। मैं तो स्पष्टतया अपने को अज्ञानी ही मानता हूँ, क्योंकि मुझे ज्ञान समुद्र सामने लहराता दिखाई पड़ रहा है और मैं उसके किनारे पर पड़े सीप, घोंघा, कौड़ी आदि पदार्थों को समेटकर एक बालक के समान अपना मनोरंजन कर रहा हूँ। समुद्र की गहराई में जो बहुमूल्य मुक्ताराशि बिखरी पड़ी है, वहाँ तक तो मेरी पहुँच ही नहीं हो सकी है। इस तथ्य को जानते हुए भला मैं अपने 'ज्ञान' का गर्व कैसे कर सकता हूँ ? तो भी इतना अंतर अवश्य है कि जब मैं अपने इस 'अज्ञान' की बात को समझता हूँ और स्वीकार भी करता हूँ, तब अन्य 'आचार्य' और 'पंडित' जो अधिकांश में अपने को 'ज्ञानी' ही मान बैठे हैं, यदि कोई उनके ज्ञान में शंका करता है तो वे उसे अपना विरोधी, शत्रु समझने लगते हैं।

नास्तिकता का आरोप—

सुकरात के विरोधियों ने उस पर नास्तिकता का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि—जब हमारे धर्म में सूर्य-चंद्रमा को देवता माना जाता है, वह उनको जड़ पदार्थ बतलाकर नवयुवकों की श्रद्धा-भक्ति को मिटाने का प्रयत्न करता है। इतना ही नहीं, वह किसी भी देवता में तनिक भी विश्वास नहीं करता। वह एक कट्टर नास्तिक व्यक्ति है।

दुनिया का एक अजीब दस्तूर देखने में आता है कि ढोंगी व्यक्ति चाहे जितने नीच हों, आस्तिक बने रहते हैं और सच्चे व्यक्ति को जो अपनी बात को स्पष्ट कह डालता है, लोग नास्तिक की पदवी दे डालते हैं, चाहे वे आस्तिक और नास्तिक का वास्तविक आशय समझते भी न हों। सुकरात जिस प्रकार सत्य मार्ग पर चलता था, समस्त जिज्ञासुओं को बिना किसी लाभ की आशा के हितकारी सलाह देता था और इसके फलस्वरूप अपने जीविका के कार्य के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए यथोचित समय न पाने से दरिद्रता का जीवन बिताता था, उसे देखते हुए उसे कभी नास्तिक नहीं कहा जा सकता।

इसके बजाय नास्तिक वह है जो, अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को हानि पहुँचाता रहता है, जो असत्य व्यवहार में किसी प्रकार का संकोच नहीं करता, जो अपने तनिक से लाभ के लिए झट से परमेश्वर की झूठी सौगंध खाता रहता है, जो ईश्वर और धर्म के नाम पर प्रतिज्ञा करके विश्वासघात करता रहता है। ऐसे व्यक्ति चाहे रोज मंदिर में जाते हों, आसन पर बैठकर घंटा, दो घंटा माला फिराते हों, तिलक-छापा भी दूसरों से अधिक लगाते हों, पर फिर भी वे पक्के नास्तिक हैं। इसका कारण यही है कि जब वे परमात्मा की झूठी शपथ खाने में कुछ भी संकोच नहीं करते, न तनिक भी डरते हैं, तो कैसे माना जाए कि वे परमेश्वर के होने और उसकी शक्ति पर सच्चे दिल से विश्वास करते हैं।

पर जो व्यक्ति प्रलोभनों को ठुकराकर सच्चाई पर कायम रहता है और हानि सहकर भी दूसरों के उपकार में लगा रहता है, अपनी आवश्यकताओं को कम से कम करके साधु-जीवन व्यतीत करता है, वह अवश्य ही आस्तिक है। ऐसा व्यक्ति चाहे हर समय भगवान् का नाम रटता न रहे और चाहे पूजा-उपासना के बाह्य कर्मकांडों में भी अधिक भाग न ले, पर वह अपना जीवन उन कामों के लिए अर्पित कर देता है, जिनको करने का भगवान् ने आदेश दिया है। फिर ऐसे व्यक्ति को नास्तिक कैसे कहा जा सकता है ? वह तो पक्का आस्तिक ही है। इसलिए सुकरात ने अदालत के सामने अपनी निर्दोषिता सिद्ध करते हुए कहा—

"एथेन्स के नागरिक जानते हैं कि, मैं दिव्य अथवा आध्यात्मिक शक्तियों में विश्वास करता हूँ और उनकी शिक्षा नवयुवकों को देता हूँ। मेरे विरुद्ध जो अभियोग-पत्र न्यायालय में दाखिल किया गया है, उसमें भी यही बात कही गई है। तब मैं पूछना चाहता हूँ कि यदि मैं आध्यात्मिक शक्तियों में विश्वास करता हूँ तो 'पितृगण' और 'अर्ध देवताओं' में अविश्वास करने वाला कैसे कहा जा सकता हूँ ? क्या कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है, जो घुड़सवारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में विश्वास करता हो, पर घोड़ों के अस्तित्व से इनकार करे ? इसलिये जब मैं दिव्य शक्तियों को मानता हूँ तो उन्हीं के अंग और उपांग देवताओं और अर्ध-देवताओं के अस्तित्व और महत्त्व से कैसे इनकार कर सकता हूँ ?"

'पर मैं जानता हूँ कि मेरे विरुद्ध जो अभियोग लगाये गये हैं, उनका वास्तविक कारण मेरी आस्तिकता अथवा नास्तिकता नहीं है, वरन् कुछ लोगों ने मेरे विरुद्ध जो विद्रोह फैलाया है, वही उसका सच्चा कारण है। इसलिए यदि इस अभियोग के फलस्वरूप मेरी मृत्यु होती है, तो उसका कारण वह विद्वेष और रिक्तता का भाव ही होगा। ऐसे ही कारणों से पहले भी अनेक सज्जन मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं और आगे भी होते रहेंगे। इस तरह कुछ लोगों के विद्वेष के फलस्वरूप मरने वालों में मेरा नाम अंतिम न होगा।"

मनुष्यों के आदेश के बजाय भगवान् का आदेश मान्य—

वास्तव में सुकरात के ऊपर अभियोग चलाने का कारण यह था कि एथेन्स के कुछ लोग उसके आध्यात्मिक उपदेशों को अपने लौकिक जीवन के लिए हानिकारक समझते थे। उसके उपदेशों को सुनकर बहुसंख्यक नवयुवक उसके अनुयायी बनते जाते थे और बाह्य कर्मकांडों की अपेक्षा उच्च आध्यात्मिक तत्त्वों को ज्यादा महत्त्व देने लगे थे। इसलिए उसके अभियोगकर्ताओं ने यही कहा कि या तो सुकरात अपना उपदेश देने का काम बंद कर दे या एथेन्स को छोड़कर अन्यत्र चला जाय, नहीं तो उसे मृत्यु दंड दिया जाय।

इसका उत्तर देते हुए सुकरात ने कहा—"यह तुम्हारा भ्रम है। जिस मनुष्य में थोड़ा-सा भी सत्य है, उसे मरने और जीने का गणित नहीं करना चाहिए। उसको तो केवल यही विचार करना चाहिए कि वह जो कुछ कर रहा है वह उचित है या अनुचित—उसका आचरण एक सज्जन मनुष्य जैसा है या एक दुर्जन मनुष्य के समान।"

अपने इस कथन में सुकरात ने स्पष्ट रूप से उसी सिद्धांत का उल्लेख किया है, जो भारतीय धर्मशास्त्रों में हजारों वर्ष पूर्व कहा जा चुका है। गीता में स्पष्ट कहा गया है कि—"पंडित जन (ज्ञानी मनुष्य)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिनके प्राण चले गये हैं, उनके लिये और जिनके प्राण नहीं गये हैं, उनके लिए भी शोक नहीं करते।'' (गीता २-११) इसी प्रकार 'नीतिशास्त्र' के एक श्लोक में कहा गया है कि—'चाहे हमारा मरण आज हो जाय और चाहे हम युगों तक जीवित रहें, पर इसका विचार न करके ज्ञानी मनुष्य सदा न्याय मार्ग पर ही चलते रहते हैं।'' इन्हीं सिद्धांतों को सत्य स्वीकार करते हुए सुकरात ने न्यायालय के सामने दृढ़ शब्दों में कहा—

"जैसा कि मैं समझता हूँ, भगवान् मुझे आदेश दे रहे हैं कि अपने और दूसरे मनुष्यों के विचारों की जाँच-पड़ताल करके उस मार्ग का उपदेश करूँ, जो आध्यात्मिक जीवन की दृष्टि से श्रेयस्कर हो। अब यदि मृत्यु के भय से या किसी अन्य भय के वशीभूत होकर मैं अपना स्थान छोड़कर भाग निकलूँ, तो मेरा यह आचरण वास्तव में लज्जास्पद होगा। कारण, मृत्यु से भयभीत हो जाना तो ज्ञान नहीं, वरन् एक पाखंड अथवा अज्ञान है। एथेन्स के नागरिकों! आपको मेरे प्रति जो प्रेम है, उसके कारण आप यह कह सकते हैं कि 'सुकरात! जाओ, इस बार हम अभियोगकर्ताओं की बात को अनसुनी करके तुमको छोड़ देते हैं। किंतु तुमको यह वचन देना होगा कि तुम अब नगर के किसी व्यक्ति को अपने दार्शनिक सिद्धांतों का उपदेश नहीं करोगे और यदि ऐसा करते हुए पकड़े जाओगे तो तुम्हारा वध कर दिया जायेगा।' अगर आप इस प्रकार की शर्त के साथ मुझे मुक्त करते हैं तो मेरा उत्तर यह है कि—एथेन्स के नागरिकों! मैं आप लोगों का सम्मान करता हूँ। आप लोगों से मुझे प्रेम है। पर आप लोगों की आज्ञा की अपेक्षा मैं भगवान् की आज्ञा का ही पालन करना श्रेयस्कर समझता हूँ। और जब तक मुझ में प्राण और कार्य करने की शक्ति है तब तक मैं दार्शनिक तत्त्वों का अध्ययन और उनका प्रचार करने से विमुख नहीं हो सकता।''

"मैं जिस किसी से भी मिलूँगा, उसी से अपने स्वभाव के अनुसार कहूँगा—'बंधु! तुम एथेन्स के समान श्रेष्ठ, शक्तिसंपन्न तथा ज्ञान की दृष्टि से भी प्रसिद्ध नागरिक हो, तो क्या तुमको अपना अधिकाधिक ध्यान धन, मान तथा यश के लिए लगाते तथा ज्ञान,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्य तथा आत्मा के सच्चे हित की अवहेलना करते हुए लज्जा नहीं आती ? इन विषयों का ध्यान और मनन तुम क्यों नहीं करते ?' यदि वह व्यक्ति कहेगा कि—"हाँ, मैं उनका मनन करता हूँ, तो भी उसी क्षण मैं उसको नहीं छोड़ दूँगा। मैं उससे और भी अनेक प्रश्न पूछूँगा, उसकी परीक्षा लूँगा, उसकी समीक्षा करूँगा और यदि मैं देखूँगा कि उसमें शील नहीं है, तो भी वह अपने शील होने का दावा करता है, तो मैं उसकी भर्त्सना करूँगा। मैं मुझसे मिलने वाले सब लोगों से इसी तरह की बातें करूँगा, चाहे वे लोग नवयुवक हों या वृद्ध; चाहे वे अपने देश के रहने वाले हों—चाहे परदेश के। हाँ, मेरा ध्यान स्वदेशवासियों की तरफ अधिक जायेगा, क्योंकि वे मेरे बांधव हैं।"

यद्यपि आज हम इस प्रकार दूसरों को उपदेश देने के लिए आतुर व्यक्तियों को प्रायः हँसी का ही पात्र समझते हैं, क्योंकि हमारे पास प्रचार के अन्य अनेक साधन जैसे—पुस्तकें, समाचार-पत्र, स्कूल, क्लब तथा विभिन्न प्रकार की संस्थाएँ मौजूद हैं। पर अब से दो-डेढ़ सौ वर्ष पूर्व हमारे देश में भी उपदेश का यही रास्ता था कि कुछ लोग किसी बड़े बाजार, घाट या मंदिर जैसे सार्वजनिक स्थान पर बैठकर मौखिक चर्चा करते रहते थे। यदि किसी व्यक्ति को अपने सामाजिक या धार्मिक विचार अन्य लोगों में फैलाने होते थे तो वह ऐसी बाजार-गोष्ठियों में खड़े होकर अपनी बात सुनाया करता था। सुकरात के समय में, जिसे लगभग ढाई हजार वर्ष व्यतीत हो चुके, यह स्थिति और भी सीमित और कठिन थी। उस समय लिखने-पढ़ने का बहुत कम प्रचार हुआ था, संसार में कोई आजकल के समान कागज को जानता भी न था। बहुत आवश्यकता पड़ने पर चमड़े, कपड़े या लकड़ी आदि पर कुछ लिखा जाता था। ऐसी दशा में उस समय लोक शिक्षण और प्रचार का एकमात्र साधन वार्तालाप और भाषण ही था। अपने विचारों का प्रचार करने के निमित्त सुकरात को भी उसी-उसी का उपयोग करना पड़ता था।

भौतिकवाद का विरोधी—

यद्यपि इतना अधिक समय बीत जाने तथा देश-काल के बिल्कुल बदल जाने के कारण हम इस बात को पूरी तरह नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझ पाते कि सुकरात को जब किसी प्रकार का लोभ-लालच न था, और न वह किसी से भेंट-पूजा लेता था, तो उसे इस प्रकार 'उपदेशक' या 'गुरु' बनने की क्या आवश्यकता थी ? जब लोग चाहते थे कि वह उनके लड़कों को नई तरह की शिक्षा न दे और रास्ते में भेंट हो जाने पर उनसे इस तरह का वार्तालाप न करे, तो उसको इस कार्य में ऐसा कौन-सा महत्त्व जान पड़ता था, जिसके लिये उसने विष का प्याला पीकर अपनी जान तक दे दी ?

यद्यपि उस समय 'साम्यवाद' और 'समाजवाद' का नामकरण नहीं हुआ था और 'पूँजीवाद' तथा 'श्रमजीवी' का स्पष्ट वर्गीकरण भी नहीं हुआ था, पर जब हम सुकरात के बयान पर विचार करते हैं और उस समय के इतिहास को ध्यानपूर्वक पढ़ते हैं, तो हम कह सकते हैं कि मूल रूप में यह मतभेद और विवाद वैसा ही था जैसा आज गरीब-अमीर के बीच में देखने में आता है। इसके प्रमाणस्वरूप हम सुकरात के बयान में से एक उद्धरण नीचे देते हैं—

"अब आप लोग समझ लीजिए कि यह भगवान् का ही आदेश है। मैं आप लोगों के बीच विचरण करके आप लोगों को समझाने के अतिरिक्त अन्य कोई भी काम नहीं करता। आप लोग नवयुवक हों अथवा वृद्ध, मैं आप सबसे कहता हूँ कि आप लोग अपने प्रति तथा अपनी संपत्ति के प्रति आसक्ति का त्याग कीजिए और सबसे पहले अपनी आत्मा के उत्कर्ष की ओर ध्यान दीजिए। मैं आप लोगों से कहता रहता हूँ कि धन के द्वारा शील (सदाचार) की उपलब्धि नहीं होती, वरन् शील के द्वारा ही मनुष्य श्रेय की प्राप्ति कर सकता है।"

"यह है मेरा उपदेश! और यदि यह सिद्धांत नवयुवकों के लिए 'कुशिक्षा' बतलाया जाता है, तो मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं एक 'कुचेष्टाकारी' व्यक्ति हूँ। अतएव हे एथेन्स के नागरिकों ! मैं आप लोगों से कहता हूँ कि आप लोग चाहे 'अनूतास' (एक अभियोगकर्ता) के कथन को मानें अथवा उसे अमान्य कर दें—आप लोग मुझको मुक्त करें या न करें, इतना आप समझ लें कि मैं अपने आचरण में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवर्तन कभी न करूँगा। इसके लिए मुझे अनेक बार मृत्युदंड सहन करना पड़े तो भी मैं इसे नहीं छोड़ूँगा।"

सुकरात के इस कथन से प्रकट होता है कि उस समय एथेन्स निवासियों में धन, वैभव और बाह्य आडंबर का महत्त्व बढ़ता जाता था और आध्यात्मिकता की तरफ से वे उदासीन होते जाते थे। अन्य लेखकों के कथनों से भी यही जान पड़ता है कि उस समय एथेन्स वाले सांसारिक सुखों और आर्थिक-लिप्सा में फँसकर नैतिक उन्नति और जीवन को पवित्र बनाने वाले सद्गुणों को क्रमशः त्यागते जाते थे। सुकरात की दृष्टि में किसी भी जाति में इस प्रकार की मनोवृत्ति का बढ़ना उसके पतन और अंत में नाश का कारण होता है। इसीलिए अपने समकालीन लोगों में भौतिकवादी विचारधारा के प्रवाह को अवरुद्ध करके आध्यात्मिक भावनाओं को प्रवेश कराने के लिए वे इतने प्रयत्नशील थे।

आत्म-बलिदानी की महिमा—

यदि सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाय तो सुकरात का विषपान द्वारा मृत्युदंड एक प्रकार से उनका आत्म-बलिदान ही था। उनको न्यायालय ने प्राणदंड के बदले में यह सुविधा दी थी कि अगर वे अपना उपदेश करना छोड़ दें अथवा अन्य किसी स्थान को चले जायें तो उनको मुक्त कर दिया जाएगा। साथ ही वहाँ ऐसा भी नियम था कि वे कुछ धन-दंड देकर भी प्राणदंड से बच सकते थे और उनके अनुयायी इसके लिए तैयार भी थे। उनके एक शिष्य ने तो प्राणदंड की आज्ञा होने के पश्चात् भी जेलर से मिलकर इस बात की व्यवस्था कर ली थी कि सुकरात चाहें तो चुपचाप जेल से निकलकर अन्यत्र चले जायें। पर सुकरात ने इनमें से किसी उपाय को अपने सिद्धांतों और चरित्र के अनुकूल नहीं समझा। उन्होंने अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य अपने समकालीन लोगों को आध्यात्मिकता की ओर प्रवृत्त करना ही बना लिया था। अगर वे स्वयं किसी हीन उपाय द्वारा अपनी प्राण-रक्षा करने को उद्यत हो जाते, तो इससे आध्यात्मिकता के प्रति सर्वसाधारण की भावना निर्बल ही पड़ती। इसलिए उन्होंने भौतिकवादी मनोवृत्ति वालों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आक्षेपों और आक्रमण का वीरतापूर्वक मुकाबला किया और पूर्ण शांति तथा निश्चिंत भाव से अपने प्राण देकर यह सिद्ध कर दिया कि वास्तव में आध्यात्मिकता की शक्ति सर्वोपरि है। इस घटना से सुकरात के सिद्धांतों, आत्मा की अमरता संबंधी विचारों को जो बल मिला, वह हजारों भाषणों और ग्रंथों से मिल सकना संभव न था। उनके बलिदान ने भावना-जगत् में इतनी बड़ी क्रांति की, कि उसका प्रभाव समकालीन लोगों पर ही नहीं पड़ा, वरन् आज तक लोग उनसे प्रेरणा ले रहे हैं। उन्होंने अपने शिष्यों से, जो उनके वियोग की कल्पना से दुःखी हो रहे थे—ठीक ही कहा था—

"सच्चे रास्ते पर कौन है, इसे अभी तो परमात्मा ही जानता है। पर जो कुछ मैं कहता हूँ, उसे कार्यरूप में परिणत कर दिखाने से समस्त संसार उसकी यथार्थता को अनुभव करने लगेगा और भावी पीढ़ियाँ उससे लाभ उठाती रहेंगी।"

एथेन्स के अनेक धनवान् और प्रभावशाली लोगों को अपने विरुद्ध एकत्रित देखकर और न्यायाधीशों को भी उन्हीं का साथी देखकर भी वे तनिक भी भयभीत नहीं हुए और उन्होंने भरी अदालत में उन सबको फटकारते हुए कहा—"क्या तुम्हें अपनी वैभवप्रियता और मान-सम्मान को पाने की लालसा पर लज्जा नहीं आती ? जबकि तुम्हें सत्य-मार्ग पर चलकर और ज्ञान प्राप्त करके अपनी आत्मा को पवित्र बनाने की तनिक भी चिंता नहीं है !" उन्होंने न्यायाधीशों द्वारा दिये गए मृत्यु-दंड की उपेक्षा करते हुए कहा—"मृत्यु के विषय में कुछ न जानते हुए भी उससे भयभीत होना उसी प्रकार व्यर्थ है, जिस प्रकार कुछ भी न जानते हुए अपने को ज्ञानी समझना। मुझे यह मालूम नहीं कि 'मृत्यु' क्या है ? वह एक अच्छी वस्तु भी हो सकती है, जबकि अपने सिद्धांत के विपरीत आचरण करना अवश्य ही बुरा है। इसलिए जो प्रत्यक्ष बुरा है उसकी अपेक्षा मैं संभावित अच्छी चीज (अर्थात् मृत्यु) को ही पसंद करूँगा। हो सकता है कि परमात्मा ने उसे मेरे कल्याण के लिए भेजा हो। मैं उसका हृदय से स्वागत करता हूँ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुकरात और महात्मा गांधी—

महात्मा गांधी सुकरात के बड़े प्रशंसक थे और उन्होंने उसके संबंध में गुजराती में एक पुस्तक "एक सत्यवीरनी कथा" नाम की लिखी थी। संयोग की बात है कि उनका अंत भी ठीक सुकरात के ढंग पर ही हुआ, अर्थात् उन्होंने भी अपने सिद्धांत की रक्षा और उसके अभिवर्धन के लिए प्राणों का बलिदान कर दिया। इन दिनों जमाना बदल गया है, इसलिए न्यायालय द्वारा तो उनको मृत्युदंड देना संभव न हो सका, पर विरोधी विचार वालों ने उनको गोली से मार ही दिया। सुकरात को जहर का प्याला पिलाने वालों ने सोचा था कि सुकरात को मार देने से अध्यात्मवाद का प्रचार रुक जायेगा, पर रुकने के बजाय वह दिन पर दिन बढ़ता ही चला गया और उसने मनुष्यों के विचारों में इतना परिवर्तन तो कर ही दिया कि अब उन बातों पर किसी को सुकरात की तरह न्यायालय में मृत्युदंड नहीं दिया जा सकता। इसी प्रकार गांधी जी ने सांप्रदायिक एकता अथवा मनुष्य मात्र को एक ही ईश्वर का बनाया हुआ सिद्ध करने के लिए अपने प्राण दे डाले। उनके बलिदान के फल से मुसलमान भी भारत के एक अंग बनकर इस देश में टिके रह सके। अन्यथा उनके हत्यारे तो यही सोच रहे थे कि महात्मा गांधी का अंत करके सांप्रदायिक एकता का भी अंत कर डालेंगे। इस प्रकार के हत्याकारियों की दृष्टि बहुत सीमित होती है और वे अपने जघन्य कृत्य के दूरवर्ती परिणाम को देखने में समर्थ नहीं होते।

इतिहास में ऐसे उदाहरण केवल ये दो ही नहीं हैं, वरन् और भी कितने ही पाये जाते हैं। महात्मा ईसा को जरूशलम के न्यायाधीशों ने गरीबों का पक्ष लेने पर 'क्रास' (सूली) पर लटका दिया, पर इससे उनके सिद्धांतों का अंत नहीं हो गया, वरन् आज आधी दुनिया उनके सामने मस्तक झुकाती है। अमेरिका के प्रेसीडेंट अब्राहम लिंकन को दास-प्रथा के समर्थकों ने मरवा दिया, पर इसके बाद भी दास-प्रथा की जड़ जमी न रह सकी और आज संसार में उसका एक भी समर्थक नहीं है। रूस के महापुरुष लेनिन को भी गरीबों का उद्धारकर्ता होने के कारण गोली से मारा गया, पर आज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लेनिन का सिद्धांत भी संसार के बहुत बड़े भाग पर छाया हुआ है। कुछ वर्ष पूर्व ही हब्शी-समस्या के लिए अमेरिका के प्रेसीडेंट कैनेडी और डॉ० लूथर किंग के प्राण इसी प्रकार लिए गए। पर हब्शियों को समान अधिकार दिये जाने का आंदोलन इन घटनाओं से रुक जाने के बजाय दिन पर दिन बढ़ ही रहा है और अब उसने अमेरिका ही नहीं समस्त संसार के हब्शियों के मुक्ति-आंदोलन का रूप ले लिया है।

ये सब उदाहरण इस बात को बतलाते हैं कि यद्यपि स्वार्थी और दुष्ट व्यक्ति सदा से सत्य और न्याय के प्रचारकों को मारने, नष्ट करने का प्रयत्न करते आये हैं, पर 'साँच को आँच कहाँ' वाले सिद्धांत के अनुसार अंत में विजय सत्य की ही हुई है। ये उदाहरण समस्त समाजसेवियों, परमार्थगामियों और न्याय के समर्थकों को साहस प्रदान करते हैं कि वे सामयिक कठिनाइयों से भयभीत न हों, उनकी सफलता निश्चित है। सत्य के सामने झूठ और न्याय के सम्मुख अन्याय अधिक समय तक नहीं ठहर सकता।

सुकरात के समय का यूनानी-समाज—

सुकरात ने आत्मा, ज्ञान और सदाचार के संबंध में जो उच्च विचार प्रकट किये और उनके अनुसार स्वयं आचरण करके दिखलाया, उसका महत्त्व उस समय और बढ़ जाता है, जब हमको यह पता लगता है कि वे ऐसे युग और समाज में उत्पन्न हुए थे, जो मुख्यतया 'सैनिक-समाज' था और जिसमें अध्यात्म-साधना की कोई संभावना न थी। अबसे ढाई हजार वर्ष पूर्व यूनान और उसके आस-पास का समाज मुख्यतया दो विभागों में बँटा रहता था—एक स्वामी और दूसरा दास। उस समय दास खरीदे और बेचे जाते थे और उन पर स्वामी का उसी प्रकार पूर्ण अधिकार होता था, जैसा गाय, भैंस, बकरी आदि पर उनके स्वामियों का होता है। वे लोग इन पशुओं को चाहे अच्छी तरह रखें, चाहे नित्य डंडों से मारें-पीटें और चाहे उनको काट डालें, कोई उनसे कुछ कहने वाला नहीं होता। उस जमाने में प्रायः विभिन्न प्रदेशों और जातियों में युद्ध हुआ करते थे और उनमें जो व्यक्ति पकड़े जाते थे, वे ही दास बना लिए जाते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे अपने स्वामियों की अचल संपत्ति की तरह होते थे, जिनको वे इच्छानुसार खरीद और बेच सकते थे और उनसे हर तरह का काम करा सकते थे।

दूसरा नियम उस समय यह था कि प्रत्येक नागरिक को देश की सेना में भर्ती होकर राज्य की आज्ञानुसार युद्धों में भाग लेना पड़ता था। यद्यपि उस समय यूनान के अधिकांश भागों में प्रजातांत्रिक ढंग के 'नगर-राज्य' स्थापित थे, तो भी उन पर कुछ प्रसिद्ध और कुलीन पुरुषों का आधिपत्य होता था, जो बहुत-से कार्य अपने लाभ की दृष्टि से भी कराया करते थे। आरंभ में तो सुकरात ने अपना पैतृक पेशा, मूर्तियों का बनाना किया, पर बाद में राजकीय नियमानुसार उन्हें भी सैनिक बनकर पचास वर्ष की आयु तक सेना के कर्तव्यों का पालन करना पड़ा था। वहाँ भी वे विवेक-बुद्धि से काम लेते थे और किसी पाप-कर्म में हाथ बँटाने को तैयार नहीं होते थे। सन् ४०४ (ईसवी पूर्व) में एथेन्स के तत्कालीन अध्यक्ष ने कुछ लोगों को गिरफ्तार कर लेने की आज्ञा दी। पर सुकरात उनको निरपराध समझते थे, इसलिए उन्होंने इस आज्ञा को मानने से इनकार कर दिया। राजाज्ञा की अवज्ञा के कारण उनको भी प्राणदंड दिया जाता, पर उसी समय प्रजा ने उस शासक के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और इससे उस घटना का वहीं अंत हो गया।

उस समय सैनिक ही समाज के मुख्य अंग थे, इसलिए प्रत्येक बालक को आरंभ से ही व्यायाम करने और शस्त्र संचालन की शिक्षा दी जाती है। जिस प्रकार आजकल प्रत्येक बालक के लिए स्कूल जाकर पढ़ना-लिखना सीखना आवश्यक माना जाता है। इसके बिना उसका समाज में कोई मान नहीं होता और न वह सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है, उसी प्रकार उस समय सभी को व्यायामशालाओं में जाकर शरीर को खूब मजबूत और कष्टसहिष्णु बनाना पड़ता था और उस जमाने के हथियार—तीर, तलवार, भाला आदि के प्रयोग का भरपूर अभ्यास करना पड़ता था। सुकरात भी इस नियम के अपवाद न थे, वरन् कहा जाता है कि व्यायाम में उनकी विशेष रुचि थी और उन्होंने उसके द्वारा अपने शरीर को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इतना सुदृढ़ बना लिया था कि वह बड़े दुर्गम और कठिन प्रदेशों में भी अपनी अति सामान्य पोशाक में सब प्रकार के भले-बुरे मौसम को सहन करके अपना कर्तव्य अच्छी तरह पालन करते रहते थे।

सुकरात और उनकी पत्नी—

कुछ महापुरुषों की तरह सुकरात की गणना ऐसे व्यक्तियों में की जाती है, जिनकी पत्नी उनके प्रतिकूल स्वभाव की होती हैं। पर उन्होंने आजन्म उसको निबाहा और उसके साथ उदारता का व्यवहार किया। कहा जाता है कि उनकी पत्नी—जेथिप्पी चिड़चिड़े स्वभाव की और कर्कशा थी। उधर सुकरात अत्यंत शांत, प्रेमी स्वभाव वाले और सीधे-सादे थे। इसलिए इनके साथ लड़ते-झगड़ते रहना और तरह-तरह से तंग करना उसके लिए साधारण बात थी। उनके ऐसे गार्हस्थ जीवन के कई किस्से इतना समय बीत जाने पर भी आज तक प्रसिद्ध हैं।

एक दिन जेथिप्पी किसी बात पर सुकरात पर बहुत नाराज हो गईं और बड़ी देर तक खूब बकती-झकती रही। पर सुकरात अपने स्वभाव के अनुसार शांत ही रहे और उन्होंने उसकी बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया। इस पर उसका गुस्सा और भी भड़क उठा और उसने एक बर्तन में भरा मैला पानी उन पर फेंक दिया। पर सुकरात पर इसका भी कोई खास असर नहीं हुआ और उन्होंने हँसते हुए इतना ही कहा—"मैं तो पहले ही जानता था कि जेथिप्पी इतना गरजने के बाद बिना बरसे न रहेगी।" हमको यह भी याद रखना चाहिए कि सुकरात का अपनी पत्नी के प्रति यह उदार व्यवहार उस जमाने में था, जिसमें स्त्रियाँ भी पुरुषों की संपत्ति समझी जाती थीं और उनके साथ कैसा भी व्यवहार किया जा सकता था ?

सुकरात के गार्हस्थ-जीवन की इस घटना को पढ़कर हमको इससे मिलती-जुलती घटना याद आती है और वह भी उनके ही समान एक बहुत बड़े पुरुष की है। महाराष्ट्र के संत तुकाराम की स्त्री भी बड़ी लड़ाका और कर्कशा थी और तुकाराम से प्रायः झगड़ती रहती थी। एक दिन तुकाराम किसी अन्य गाँव से आ रहे थे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो किसी किसान ने उनको बहुत से गन्ने दे दिये। पर जब वे अपने गाँव में पहुँचे तो रास्ते में ही लड़के उनसे गन्ने माँगने लगे। वे उनको एक-एक गन्ना देने लगे, यहाँ तक कि घर पहुँचते-पहुँचते उनके पास केवल एक गन्ना रह गया। वह उन्होंने अपनी स्त्री को दे दिया। इस पर वह इतनी क्रोधित हो गई कि उसने गन्ने को उनकी पीठ पर दे मारा। गन्ना बीच से टूटकर दो टुकड़े हो गया। तुकाराम ने यह देखकर कहा—"देवी जी, यह तो आपने बड़ा ठीक हिसाब लगाया। गन्ने के अब दो टुकड़े हो गये, एक तुम चूस लो और दूसरा मैं लिये लेता हूँ।"

एक बार जेथिप्पी ने बाजार में ही सुकरात से झगड़ा किया और उनका कोट फाड़ डाला। यह देखकर सुकरात के मित्र बड़े नाराज हुए और उन्होंने कहा कि जेथिप्पी को इसका दंड अवश्य दिया जाना चाहिए। पर सुकरात ने कहा—"जिस प्रकार सईस दुष्ट घोड़ों के साथ रहकर उन्हें ठीक करने का प्रयत्न करते हैं, उसी प्रकार मैं भी एक चिड़चिड़े स्वभाव वाली स्त्री के साथ रहता हूँ और जिस प्रकार यदि सईस उस दुष्ट घोड़े पर काबू पा लेता है तो अन्य घोड़ों को तो वह आसानी से वश में रख सकता है, उसी प्रकार जेथिप्पी के दुर्व्यवहार का मुकाबला करता हुआ मैं समस्त संसार का सामना करने का अभ्यास करता हूँ।"

एक बार सुकरात के किसी मित्र ने इस प्रकार की घटनाओं को देखकर कहा कि—"जेथिप्पी का व्यवहार असहनीय है, आप कैसे उसे बरदाश्त करते हैं ?" सुकरात ने कहा—"जिस प्रकार आप अपनी पालतू बतखों की 'घें-घें' को सुनते रहते हैं, उसी प्रकार मैं भी इसकी बातों को सुनने का अभ्यस्त हो गया हूँ।" मित्र ने कहा—"परंतु बतखें तो मुझे अंडे और बच्चे देती हैं।" सुकरात ने उत्तर दिया—"जेथिप्पी भी मेरे बच्चों की माँ है।"

एक बात यह भी थी कि अपना अधिकांश समय निःस्वार्थ भाव से लोक-शिक्षण में लगा देने पर सुकरात के पास अपने जीवन निर्वाह की तरफ ध्यान देने को बहुत कम समय बचता था। इससे उनको सदैव बहुत गरीबी में समय व्यतीत करना पड़ता था। वे स्वयं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अत्यंत सादगी के साथ रहते थे और भोजन के साथ अचार, चटनी, रायता जैसी 'जायकेदार' चीजों की कभी भी इच्छा नहीं रखते थे। एक बार कुछ धनी व्यक्तियों को उन्होंने भोजन के लिए आमंत्रित किया। जेथिप्पी ने भोजन के घटिया होने पर असंतोष प्रकट किया, तो सुकरात ने कहा—"अगर वे समझदार होंगे तो उन्हें इस सीधे-सादे भोजन में कोई खराबी नहीं जान पड़ेगी और यदि वे मूर्ख हैं तो मूर्खों के कथन से लज्जित होने की कोई बात ही नहीं।" इस प्रकार सुकरात तो अपने दार्शनिक ज्ञान और आत्म-नियंत्रण के कारण प्रत्येक स्थिति में प्रसन्न और संतुष्ट रहते थे। पर जेथिप्पी जैसी सामान्य स्त्री से इस प्रकार की आशा करना व्यर्थ थी। इस कारण से भी यदि उसकी कटुता में कुछ वृद्धि हो गई तो कोई आश्चर्य नहीं।

कुछ भी हो सुकरात ने अपना गार्हस्थ जीवन सुख-दुःख और असुविधाओं की परवाह न करके अच्छी तरह निबाहा, और जो लोग जरा-जरा-सी बातों पर तलाक की तैयारी करने लगते हैं अथवा अपने जीवन का अंत करके झंझटों से छुटकारे की कोशिश करते हैं, उनके लिए एक उत्तम उदाहरण छोड़ गया। अपने सांसारिक जीवन में भी उसने आध्यात्मिकता की महत्ता को सिद्ध करके दिखा दिया। वास्तव में आत्मज्ञानी की निगाह में संसार के जो छोटे-बड़े उतार-चढ़ाव एक खेल की तरह जान पड़ते हैं, वे ही धन तथा सुख के लिए मारे-मारे फिरने वाले भौतिकवादी के लिए जीवन-मरण के प्रश्न बन जाते हैं। यही कारण है कि संसार में सबसे अधिक धनी देश अमेरिका में प्रति वर्ष लाखों व्यक्ति आत्म-हत्या कर डालते हैं, जबकि करोड़ों लोगों को भर पेट रोटी भी न मिलने पर भारत में इस प्रकार अपने जीवन का अंत करने वालों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम है।

सामाजिक अधिकार की महत्ता—

यद्यपि समाज के ही कुछ लोगों ने द्वेषवश सुकरात को प्राणदंड दिलाया, पर वह जीवन के अंतिम क्षण तक समाज के विरुद्ध कोई काम करने को तैयार न हुए। वरन् जब उनके मित्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रितॉन ने जेल से छिपकर निकल जाने की व्यवस्था कर दी, तब भी उन्होंने यही कहकर उसे अस्वीकार किया कि ऐसा करना समाज के प्रतिनिधि रूप 'राज्य' अथवा 'शासन' के प्रति अवज्ञा या विद्रोह प्रकट करना होगा। जिस समाज ने हमको जन्म दिया, पाला-पोसा, शिक्षा प्रदान की और संसार में कुछ काम कर सकने योग्य बनाया, उसका किसी भी रूप में विरोध करना अनुचित है। उन्होंने स्वयं ही कल्पित करके इस प्रकार के समाज विरोधी विचारों के संबंध में एक वक्तव्य प्रस्तुत किया, जिसमें 'समाज' की तरफ से सुकरात से कहा गया—

"सुकरात! अगर तुम राज्याज्ञा को अमान्य करके जेलखाने से बाहर निकल जाते हो तो इसका अर्थ यह होगा कि तुम उन नियमों तथा प्रतिज्ञाओं को भंग कर रहे हो जो तुमने हमारे साथ की हैं। उन सबका मनन और पालन तुम सत्तर वर्ष तक कर चुके हो। यदि वे नियम अथवा विधान तुमको अन्याययुक्त प्रतीत होते थे तो इस बीच में तुम एथेन्स को छोड़कर चाहे जहाँ चले जा सकते थे। पर तुम इस नगर के शासन-विधान में ऐसे अनुरक्त बने रहे कि तुमने कभी बाहर निकलने का विचार भी नहीं किया। अतएव अब यदि तुम इस नगर को छोड़कर इस प्रकार भागते हो तो निश्चय ही अपने को हास्यास्पद बनाओगे।"

"तनिक यह विचार करो कि यदि तुम इस प्रकार का विपरीत कार्य करते हो तो इससे अपना अथवा अपने मित्रों का कौन-सा हित करोगे ? यह तो निश्चित है कि ऐसा होने पर तुम्हारे मित्रों को निर्वासित किया जायेगा या नागरिकता से च्युत किया जायेगा अथवा उनकी संपत्ति जब्त कर ली जायेगी। फिर यदि तुम भागकर किसी समीप के राज्य में जाओगे भी तो वहाँ तुमको एक विदेशी की तरह ही देखा जायेगा और भगोड़ा समझकर घृणा की दृष्टि से देखा जायेगा।"

"अतः सुकरात ! हमारी बात पर ध्यान दो। हमने ही तुम्हारा पालन-पोषण किया है। इसलिए उचित यह है कि तुम 'धर्म' अथवा 'कर्तव्य' के सम्मुख अपने जीवन अथवा संतान की चिंता न करो। तुम्हें सबसे पहले 'धर्म' की ही चिंता करनी चाहिए, जिससे 'परलोक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के राजा' (ईश्वर) के समक्ष तुमको निर्दोष समझा जा सके। पर यदि तुमने वह कार्य किया, जिसकी सम्मति तुमको तुम्हारे मित्र देते हैं, अर्थात् तुम जेल से भाग गये तो तुम इस जीवन में और परलोक में भी सुखी नहीं हो सकोगे।"

"इस समय तो तुम निर्दोष रहकर ही इस लोक से प्रयाण कर रहे हो। तुमने दुःख भोगा है, किंतु कोई पाप-कृत्य नहीं किया। तुम्हारा मरण भी राज्य द्वारा नहीं, कुछ विद्वेषी मनुष्यों द्वारा संपन्न किया गया है। किंतु यदि तुम पाप के प्रतिकार में पाप, अहित के प्रतिकार में अहित करोगे तो तुम उन कर्तव्यों का घात करने वाले माने जाओगे, जो हमारे प्रति तुमको करणीय हैं।"

इस प्रकार सुकरात ने अपनी 'धर्म-बुद्धि' से उन सब तर्कों का उत्तर दे दिया, जो उनके मित्र या शत्रु उनके पक्ष या विपक्ष में पेश कर सकते थे। उसने यह सिद्ध कर दिया कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका निर्माण और निर्वाह एक मात्र समाज के आश्रय से ही होता है। इसलिए उसे किसी दशा में ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए, जो समाज के विपरीत अथवा उसके लिए हानिकारक हो। सुकरात ने देखा कि आज भी एथेन्स के बहुसंख्यक व्यक्ति उसे सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, उसे एक सच्चा और परमार्थी व्यक्ति मानते हैं, सैकड़ों मनुष्य उसके भक्त और अनुयायी हैं। ऐसी दशा में यदि कुछ मनुष्यों ने व्यक्तिगत या स्वभावगत मतभेद के आधार पर उसका अहित किया तो भी उसे ऐसा काम कदापि नहीं करना चाहिए, जिससे समाज में विशृंखलता उत्पन्न हो अथवा उसकी सत्ता के विरुद्ध अवहेलना का भाव लोगों में बढ़े।

वर्तमान समय में यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो मनुष्य, समाज के ऊपर पहले से कहीं अधिक आश्रित हो गया है। सब प्रकार के साधनों तथा वैज्ञानिक जानकारी के बढ़ जाने से शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, परिवहन आदि अनेक जीवनोपयोगी विषयों में ऐसी सामूहिक सुविधाएँ उत्पन्न कर दी गई हैं, जो प्राचीन काल में लोगों को प्राप्त नहीं थीं। पर खेद का विषय है कि इस समय लोग और खास कर हमारे देश के निवासी अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संबंध में बहुत ही लापरवाह दिखाई पड़ रहे हैं। वे समाज या उसके प्रतिनिधि स्वरूप 'राज्य' द्वारा मिलने वाले लाभों को तो ईमानदारी या बेईमानी से जैसे भी हो अधिक से अधिक लेना चाहते हैं, पर उसके प्रति क्या कर्तव्य हैं ? इसका ध्यान वे कभी नहीं रखते।

इतना ही नहीं बहुसंख्यक व्यक्ति तो कानून द्वारा लगाये गए उत्तरदायित्वों से भी बचने की चेष्टा करते रहते हैं। यही सबसे बड़ी शोचनीय बात है, जिसके फल से आज समाज में अनेकानेक दोष उत्पन्न हो गये हैं। जिनके कारण सज्जन लोगों को कष्ट सहन करना पड़ता है और दुष्टजन उच्छृंखल जीवन व्यतीत करते हैं। इस संबंध में सुकरात का उपर्युक्त अभिमत हमारे लिए बहुत ही शिक्षाजनक और प्रेरणाप्रद है। उसने अपने प्राण देकर भी यह दिखला दिया कि मनुष्य अंततः समाज की ही संतान है और उसे कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जो उसके लिए अहितकर हो।

आत्मा का अस्तित्व और कर्म सिद्धांत—

सुकरात के वक्तव्यों में एक बड़ी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जहाँ ईसाई और मुसलमान धर्मों में मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं माना है और पशुओं में आत्मा का अस्तित्व स्वीकार ही नहीं किया है, वहाँ सुकरात ने भारतीय मान्यता से बिल्कुल मिलता-जुलता हुआ आत्मा के पुनर्जन्म का सिद्धांत स्वीकार किया है। उसने यह भी कहा है कि मनुष्य अपने कर्मानुसार विविध योनियों में जाता है। कर्मफल का सिद्धांत कितना सत्य है, इस पर यहाँ विशेष विवेचन करने का स्थान नहीं है, तो भी इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि जो लोग इसको ठीक तरह से समझ लेते हैं और तदनुसार आचरण करते हैं, वे पाप कर्मों से बचकर अवश्य ही सद्गति को प्राप्त होते हैं। यद्यपि ईसाई धर्म और मुसलमान धर्म सुकरात के बाद आरंभ हुए हैं और उस समय यूनान और रोम आदि प्रसिद्ध देशों में 'बहुदेववाद' के आधार पर जो धर्म प्रचलित था, वह इनसे सर्वथा भिन्न था, पर वे लोग भी आत्मा और पुनर्जन्म के सिद्धांत को इतने स्पष्ट रूप में स्वीकार करते थे, इसका कोई प्रमाण नहीं। उस समय बहुसंख्यक व्यक्ति यह भी कहते थे कि मृत्यु के पश्चात् जिस प्रकार देह छिन्न-भिन्न हो जाती है, उसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार आत्मा भी क्षय को प्राप्त होकर समाप्त हो जाती है। पर सुकरात ने जेलखाने में बंद रहते समय भी अपने अनुयायियों को पुनर्जन्म का सिद्धांत जैसे निर्भ्रांत रूप में समझाया, उससे विदित होता है कि वह अवश्य ही भारत के ऋषि-मुनियों की मान्यता से परिचित था।

सुकरात ने कहा—"मित्रों ! संसार में दो प्रकार के पदार्थ हैं—व्यक्त और अव्यक्त (स्थूल और सूक्ष्म)। हमारा शरीर व्यक्त-पदार्थों की श्रेणी में माना जाता है और आत्मा को अव्यक्त अथवा सूक्ष्म कहा जाता है। इसमें भी संदेह नहीं कि वह अव्यक्त आत्मा शरीर में आकर व्यक्त होता है और ज्ञानेंद्रियों द्वारा सांसारिक अनुभव प्राप्त करता है। अब जो लोग यहाँ आकर विकारों में फँस जाते हैं, उनकी आत्मा तरह-तरह की भ्रांतियों का शिकार बन जाती है। पर जो लोग आत्मनिष्ठ होकर चिंतन करते हैं, वे दूसरे ही लोक में विचरण करते हैं। वह क्षेत्र अमृतत्व और अनंतता का है। आत्मा अंत में अव्यय के साथ समागम करके स्वयं अव्यय हो जाती है। आत्मा की इसी अवस्था को 'प्रज्ञा' (गीता के शब्दों में 'स्थित प्रज्ञ') कहते हैं।"

"आत्मा अदृश्य है और परलोक भी उसी के समान अदृश्य है। वह उसी के समान पवित्र और भव्य भी है। जब आत्मा परलोक में पहुँचकर उस शुभ और संबुद्ध देवता की ओर गम्यमान होगी (जिसके पास यदि भगवान् ने चाहा तो मेरी आत्मा शीघ्र जायेगी), तो यह कैसे संभव है कि साधारण मनुष्यों के कथनानुसार वह शीघ्र ही विनष्ट हो जाए ? ऐसा कभी नहीं हो सकता—यह बात सत्य के विपरीत है। जो आत्मा मृत्यु के समय शुद्ध है और जो अपने साथ देह का कोई मल नहीं ले जाती, जिसने संसार में रहते हुए भी देह को अपना नहीं समझा, अर्थात् जो तत्त्वज्ञान की निष्ठावान् शिष्या रही है, वह आत्मा अदृश्य लोक को ही जाती है—उस लोक को जो दिव्य, अमृतमय और प्रज्ञानयुक्त है, वह मनुष्यों की भ्रांतियों, मूढ़ताओं, आशंकाओं और उद्दाम वासनाओं से मुक्त हो जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"किंतु जो आत्मा दूषित हो गई है, जो प्रयाणकाल में अशुद्ध है, जो देह के साथ अनुरक्त है, देह के सुखों पर मुग्ध है, जो इस देह को ही सत्य मानती है, वह क्या कभी शुद्ध और अदूषित होकर परलोक को प्रयाण कर सकती है ? कभी नहीं—"आत्मा की इन दोनों प्रकार की गतियों का वर्णन 'भगवद् गीता' में भी ज्यों का त्यों मिलता है—

शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते।
एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः।।

(गीता ८-२६)

अर्थात्—"संसार में यह शुक्ल और कृष्ण दो प्रकार की गतियाँ निश्चित मानी गईं हैं। इनमें से प्रथम के द्वारा जाने वाला फिर वापस नहीं आता और दूसरी के द्वारा गया हुआ फिर लौट आता है अर्थात् जन्म-मृत्यु के चक्र को प्राप्त होता है।"

सुकरात को 'कर्मफल' के सिद्धांत पर पूरा विश्वास था और उसी का उपदेश देकर, वह अपने अनुयायियों को सत्कर्म करने की प्रेरणा देता था। इसके विपरीत उस समय के अन्य 'विद्वान्' कहलाने वाले आजकल के अनेक 'वैज्ञानिकों' की तरह यही सिद्ध करने का प्रयत्न करते रहते थे कि, जो कुछ है यही संसार है। आत्मा कहीं से भी आती हो, पर वह पृथ्वी पर सुख भोगकर शरीर के साथ ही सदा के लिए समाप्त हो जाती है। इस प्रकार के उपदेश का स्वाभाविक परिणाम 'खाना-पीना और मौज उड़ाना' ही होता है। सुकरात इसको समाज के लिये पतनकारी समझता था, इसलिए प्रायः उन स्वार्थी आचार्यों के साथ वाद-विवाद करके अपने प्रबल तर्कों से उनको निरुत्तर कर देता था। उसकी शास्त्रार्थ की शैली ऐसी थी कि वह लगातार एक के पश्चात् दूसरा प्रश्न करके जो चाहता था प्रतिपक्षी के मुख से ही कहलाता जाता था और अंत में जान पड़ता था कि सुकरात का कथन ही ठीक है। इसके फलस्वरूप उस समय के अधिकांश पेशेवर विद्वान्, जो अमीरों को उपदेश करके बड़ी-बड़ी रकमें वसूल करते थे, उसके विरोधी बन गये थे और उन्हीं सबने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परस्पर सलाह करके अपने अनुयायियों द्वारा सुकरात पर मुकदमा चलवाकर उसे प्राणदंड दिलवाया था।

आगे चलकर सुकरात ने भारतीय धर्म की मान्यता के अनुसार यह भी सिद्ध किया कि पाप-कर्म करने वाले व्यक्तियों की आत्माएँ प्रेत-योनि में जाती हैं अथवा अपनी प्रकृति के अनुसार पशुओं की नीच योनि में जाकर कष्ट भोगती हैं। उसने अपने शिष्यों से कहा—

"और, भाइयों ! जिन लोगों का ध्यान निरंतर दैहिक-सुखों की ओर लगा रहता है और जो हर प्रकार से इस पार्थिव शरीर की सेवा-सुश्रूषा में ही लगे रहते हैं, उनकी आत्मा भौतिक-तत्त्वों के साथ दृढ़तापूर्वक बँध जाती है। यह भौतिक-तत्त्व तो निश्चय ही स्थूल होते हैं, इसलिए वे जिस आत्मा में लिपटे रहते हैं, उसका मरण के बाद उत्थान न होकर अधःपतन ही होता है। वे आत्माएँ प्रायः श्मशानों तथा शव-मंदिरों (कब्रिस्तान) के समीप ही भटकती रहती हैं। अनेक लोग कहा करते हैं कि हमने उनको प्रेत की आकृति में वहाँ देखा है।

"यह निश्चय है कि जो आत्माएँ अपने स्वार्थी और निकृष्ट पूर्व-जीवन के कर्मों का फल भोगने के लिए इस प्रकार के स्थानों में भटकती रहती हैं, वे सज्जन मनुष्यों की नहीं, दुर्जन मनुष्यों की भी होनी चाहिए। अंत में स्थूल-पदार्थों की लालसा उनको किसी ऐसे 'कारागार' में अवरुद्ध कर देती है, जो उनके पूर्व-जन्म की प्रकृति और कर्मों के अनुकूल होता है।"

जब शिष्यों ने प्रश्न किया कि—"हे सुकरात ! आपका आशय किस प्रकृति से है ?" तो उन्होंने उत्तर दिया—"मेरा आशय यह है कि जिन मनुष्यों ने अपना ध्यान हमेशा बहुत अधिक खाने-पीने या व्यभिचार अथवा शराब आदि नशों में लगाया है और कभी उनको रोकने की चेष्टा नहीं कि वे गधा तथा उसी प्रकार के अन्य पशुओं के शरीर में जन्म लेंगे और जिन मनुष्यों ने अधर्म, अत्याचार तथा हिंसा का मार्ग अपनाया है, वे भेड़िया, श्येन (बाज पक्षी) अथवा गिद्धों की योनि में जन्म लेंगे। हम अन्य किसी उत्तम योनि में उनका जन्म कैसे मान सकते हैं ?"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"कुछ मनुष्य इनकी अपेक्षा अधिक भाग्यवान् होते हैं। पर सबसे अधिक भाग्यवान् वे ही होते हैं, जिन्होंने नगर-संबंधी और समाज-संबंधी शील (सदाचार) का आचरण किया है। उन 'शीलों' का नाम है—संयम और धर्म। इन प्रवृत्तियों का आचरण दर्शनशास्त्र और ज्ञान की जानकारी के बिना भी हो सकता है। ऐसे व्यक्ति उत्तम योनियों में विशेषतः सज्जन और श्रीमान् व्यक्तियों के घर में ही जन्म लेते हैं।"

"पर जिस मनुष्य ने तत्त्वविद्या (दर्शन और ज्ञान) का अध्ययन नहीं किया है और जो इस लोक से प्रयाण करते समय पूरा शुद्ध नहीं हो गया है, वह देवताओं के साथ रहने का अवसर नहीं पा सकता। यही कारण है कि तत्त्वविद्या के आराधक देह की समस्त वासनाओं से विरक्त रहते हैं, उनका निरोध करते हैं और उनके वशीभूत होना स्वीकार नहीं करते। इस प्रकार जो लोग अपने परिवार, संपत्ति और सांसारिक भोगों की चिंता न करके अपनी आत्मा की ही चिंता करते हैं और शरीर को सुखी बनाने के लिए उसकी बहुत सेवा-सुश्रूषा में ही अपना सारा ध्यान और शक्ति नहीं लगा देते, तो वे मरने के बाद स्थूल-जगत् के मार्ग से भिन्न अन्य मार्ग द्वारा प्रयाण करते हैं और उस स्वरूप को प्राप्त करते हैं, जो बोधिमय और अदृश्य हैं।"

इस प्रकार सुकरात ने तीन प्रकार के—उत्तम, मध्यम और अधम व्यक्तियों का वर्णन किया है। सबसे नीचा दर्जा उन लोगों का है, जो संसार के भोगों में ही सर्वथा आसक्त रहते हैं और इसके लिए भले-बुरे किसी भी उपाय को अपनाने में संकोच नहीं करते। ऐसे लोग मरते समय भी उन विषयों का चिंतन नहीं छोड़ सकते, इसलिए उन्हीं योनियों में जाते हैं, जिनमें इन प्रवृत्तियों की अधिकता होती है। दूसरा दर्जा उन लोगों का है, जो सांसारिक भोगों को भोगते हैं पर धर्मानुकूल मार्ग से। वे दूसरों के हित-अहित का भी ध्यान रखते हैं, उनको भी अपनी तरह सुखी देखना चाहते हैं और इसलिए परोपकारयुक्त जीवन व्यतीत करते हैं। वे पुनः उत्तम मनुष्यों के घरों में जन्म लेकर आगामी प्रगति का अवसर प्राप्त करते हैं। तीसरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दर्जा उन लोगों का है, जिन्होंने इस स्थूल जगत् तथा नश्वर देह की असारता को समझ लिया है और इसकी माया-ममता को त्यागकर अपना ध्यान केवल परमार्थ की ओर लगा दिया है। वे सांसारिक सुख-दुःख की परवाह नहीं करते और जैसी भी स्थिति में रहना पड़े उसी में पूर्ण संतुष्ट रहते हैं। इसलिए अंतिम समय में भी वे समस्त सांसारिक पदार्थों और अपनी स्थूल देह से भी उदासीन रहकर 'अदृश्य' या स्वर्गीय स्थिति को प्राप्त होते हैं।"

सुकरात का उपर्युक्त कथन पूर्ण रूप से हिंदू धर्म के अनुकूल है। इस सिद्धांत का 'अक्षर और क्षर' विभाग में विवेचन करते हुए भगवान् कृष्ण ने कहा है—

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भाव भावितः।।

(गी० ८.६)

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन्।।

(गी० ८.८)

अर्थात्—"जो मनुष्य सदा जिस रंग में रंगा रहता है, वह अंत में भी उसी भाव का स्मरण करता हुआ शरीर त्यागता है और उसी भाव में जा मिलता है।"

"जो मनुष्य अभ्यास की सहायता से चित्त को दूसरी ओर नहीं जाने देता और उसे स्थिर करके केवल दिव्य पुरुष का ध्यान करता रहता है तो वह मनुष्य उसी में जा मिलता है।"

यह निश्चय हो गया है कि अब से पाँच-सात हजार वर्ष पहले भी मिश्र और फिलस्तीन आदि देशों का भारत से संबंध था और कुछ वैदिक धर्मानुयायियों ने विदेश गमन करके उन दूर देशों में अपनी बस्तियाँ बसाई थीं। उनके द्वारा भारतीय धर्म के सिद्धांतों का वहाँ भी प्रचार हो गया और वहाँ के अन्य निवासी भी कुछ परिवर्तित रूप में उनको मानने लगे। एथेन्स के निवासी जिस 'ज्यूस' देवता की पूजा करते थे, वह विद्वानों के कथनानुसार वैदिक धर्म के "द्यौस"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(आकाश अथवा सूर्य) का ही बदला हुआ रूप था। 'ज्यूस' का आशय 'सूर्य देवता' से ही था। वैदिक धर्म में भी परमात्मा का दृश्य रूप सूर्य को ही माना गया है और उसी की 'विवस्वान्', 'पूषा', इंद्र आदि के नामों से उपासना की जाती थी। इसलिए यदि सुकरात आत्मा के अस्तित्व और कर्म सिद्धांत के अनुसार जीवात्मा की सद्गति या दुर्गति के सिद्धांत को समझकर उसका प्रचार करने लगा तो यह भारतीय धर्म का प्रभाव ही माना जा सकता है।

मृत्यु का स्वागत—

कुछ भी हो सुकरात ने जिस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक मृत्यु का स्वागत किया, उससे यह निश्चय हो जाता है कि अवश्य ही वह एक सच्चा आत्म-ज्ञानी था। उसने आत्मा को अविनश्वरता के सिद्धांत को पूर्णतया हृदयंगम कर लिया था। जिस दिन उसको मृत्युदंड होने वाला था, उस दिन उसका प्रिय शिष्य 'क्रितॉन' प्रातः होने से पूर्व ही जेलखाने में पहुँच गया। उसे यह देखकर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि मृत्युदंड के सिर पर खड़े होते हुए भी सुकरात बड़ी शांति के साथ गहरी नींद में सोया हुआ था। यह बात उसकी समझ में नहीं आई कि जिस व्यक्ति को आज विष का प्याला पीकर सदा के लिए संसार से चला जाना है, वह इस प्रकार निश्चिंत होकर कैसे सो सकता है ? जब उसने अपनी यह शंका सुकरात के सम्मुख व्यक्त की तो उसने यही उत्तर दिया कि—"मैं मृत्यु को शत्रु की तरह नहीं, वरन् मित्र की तरह समझ रहा हूँ, इसलिए मुझे उसके आगमन से अशांति अथवा शोक कैसे हो सकता है ? और अब, जब कि ऐसा अवसर उपस्थित हो गया है, मैं अपने प्रण से कैसे विमुख हो सकता हूँ ? जिन सिद्धांतों में सदा ही मेरी श्रद्धा एवं भक्ति रही है, उनमें अब भी मैं श्रद्धा रखता हूँ और जब तक हमको अन्य श्रेष्ठतर सिद्धांतों का पता नहीं लग जाता तब तक मैं निश्चय ही किसी उपाय द्वारा इस दंड से बचने की कोशिश नहीं करूँगा।"

और फिर जब उनके विष पीने का नियत समय आ गया, तब भी वे अंतिम समय तक हँसते-बोलते रहे। उनके शिष्य क्रितॉन ने पूछा कि—"हम आपके शव का संस्कार किस तरह करें ?" तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने मुस्कराते हुए कहा कि "जिस प्रकार तुम उचित समझो, पर तुम मुझे पकड़कर रखना और सावधान रहना कि मैं तुम्हारे हाथ से भाग न निकलूँ।"

जब जेल का अध्यक्ष वहाँ आया तो उसने कहा—"सुकरात, मैं आपको इस स्थान पर आने वाले समस्त लोगों में भद्रतम, सौम्यतम तथा श्रेष्ठतम समझता हूँ। आपके विषय में मैं यह नहीं सोच सकता कि अन्य लोगों के समान आप में भी कोप की भावना है। अन्य लोगों से, जब मैं अधिकारियों की आज्ञानुसार विषपान करने का अनुरोध करता हूँ तो वे मुझ पर क्रोधित होते हैं और अपशब्द कहते हैं। आपके विषय में मैं निश्चित हूँ कि आप क्रोधित नहीं होंगे। अब मैं कहता हूँ कि आपकी यात्रा शुभ हो और भावी का जो विधान है, उसे आप धैर्यपूर्वक सहन करें।" यह कहते हुये उसका गला भर आया, नेत्रों में आँसू छलछला आये और वह मुँह फेरकर बाहर चला गया।

सुकरात ने कहा—"तुम्हारी शुभकामनाओं के विनिमय में तुम्हें अपनी शुभकामना देता हूँ। विष का प्याला भेज दो।" फिर उसने अपने मित्रों से कहा—"कैसा अच्छा मनुष्य है यह ? जबसे मैं इस कारागार में आया हूँ, तबसे नित्य ही मुझसे मिलने आता है और इसका व्यवहार यथासंभव सज्जनोचित रहा है।"

जब विष का प्याला आया तो उन्होंने बड़ी तत्परता और प्रसन्नता से उसे होठों से लगाकर स्वाभाविक ढंग से पी लिया। अभी तक उनके मित्र किसी प्रकार अपने पर संयम रखे थे। पर जब उन्होंने उनको विष पीते देखा और प्याला खाली हो गया, तो वे धैर्य धारण नहीं कर सके। क्रितॉन और एक अन्य मित्र मुँह ढक कर आँसू बहाने लगे, पर 'अपालो दोरास' आर्तनाद करके रोने लग गया, जिससे अन्य दोनों का भी धैर्य छूटने लगा।

उस समय एकमात्र सुकरात ही पूर्ण शांत और अचल थे। उन्होंने कहा—"यह विचित्र आर्तनाद कैसा है ? मैंने स्त्रियों को तो इसीलिए बाहर भेज दिया था कि वे यहाँ किसी प्रकार का अशोभन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचरण न करने लगें, क्योंकि मैंने सुना है कि मनुष्य को शांति के वातावरण में मरना चाहिए तो तुम भी शांत हो जाओ। क्या आज तक मैंने तुमको संसार की असारता और आत्मा की अमरता का जो उपदेश दिया है उसका यही प्रभाव है ?"

सुकरात की दृढ़ता को देखकर और उनका आदेश सुनकर सब लोग संकुचित भाव से चुप हो गये। विष का प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ता गया और सुकरात भूमि पर लेट गये। उनके अंतिम शब्द ये थे—"क्रितॉन ! मैंने 'आईस्कूलेपिआस' (यूनान का एक देवता) को एक जीवित कुक्कुट भेंट देने की मानता मानी थी, पर अभी तक उसे पूरा न कर सका। क्या तुम मेरे इस ऋण को चुकाने का ध्यान रखोगे ?"

क्रितॉन ने कहा—"ऋण का परिशोध हो जायेगा। क्या और कोई बात है ?" पर इसका कोई उत्तर न मिला। सुकरात की आत्मा परलोक की यात्रा कर चुकी थी। जिस किसी ने सुना उसी ने कहा—"इस युग में जितने भी मनुष्य हुए हैं सुकरात उन सबमें प्रज्ञावान्, धर्मप्राण और सत्यपुरुष थे।"

सुकरात द्वारा परलोक वर्णन—

मरने से कुछ समय पूर्व अपने अनुयायियों से बातें करते हुए सुकरात ने परलोक का जो वर्णन किया था, वह भी भारतीय पुराणों से बहुत कुछ मिलता-जुलता ही है। जब लोगों ने उससे मृत्युदंड के फलस्वरूप होने वाले कष्ट का जिक्र किया तो उसने यही कहा कि—"यदि आत्मा की अमरता में हमको विश्वास है तो मृत्यु कोई बुरी—हानिकारक वस्तु नहीं हो सकती। जैसा कुछ लोग कहते हैं, यदि मृत्यु होने पर सब कुछ का अंत हो जाता तो दुर्जन मनुष्य मरकर अत्यंत लाभान्वित होते, क्योंकि मरने के पश्चात् उनको केवल अपनी देह से ही मुक्ति नहीं मिल जाती, वरन् अपने समस्त पाप-कर्मों से भी सहज में ही मुक्ति मिल जाती। किंतु जब हम आत्मा को अमर स्वीकार करते हैं तो श्रेष्ठतम शील (सदाचार) और ज्ञान के बिना पापों से छुटकारा हो ही नहीं सकता। कारण यह कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारी आत्मा जब परलोक की ओर प्रयाण करती है तो वह संस्कार और शिक्षा के अतिरिक्त अन्य कुछ भी अपने साथ नहीं ले जाती।"

"मृत्यु के उपरांत जैसा कि लोग कहते हैं, प्रत्येक व्यक्ति का यमदूत, जिससे जीवन में उसका संबंध था, आत्मा को एक विशेष स्थान पर ले जाता है, जहाँ मृतकों को एकत्र किया जाता है। वहाँ पर धर्म-न्याय हो जाने के उपरांत वे उसी पथप्रदर्शक का अनुगमन करती हुई, परलोक में प्रवेश करती हैं और जब वे वहाँ रहकर अपने कर्मों का फल भोग चुकती हैं तो एक अन्य पथप्रदर्शक, अनेक युगों के पश्चात्, उनको पुनः संसार में लौटा लाता है।"

"परलोक का मार्ग सीधा नहीं है, वरन् उसमें बहुत से 'चौराहे' और घुमाव हैं। ज्ञानी और शुद्ध आत्माएँ तो प्रशस्त पथ का अनुगमन करती हैं और मार्ग के संकटों से बचती रहती हैं, पर जिन आत्माओं को देह की लालसा लगी रहती है, वे बहुत समय तक अपनी निर्जीव देह अथवा अन्य पदार्थों के पास ही घूमती रहती हैं। अनेक संघर्षों और उत्पीड़नों के उपरांत उनका यमदूत उन्हें आत्माओं के एकत्र होने के स्थान तक ले जाता है। वहाँ पर यदि वह आत्मा अशुद्ध है और उसने जघन्य पाप-कर्म किये हैं तो प्रत्येक आत्मा उससे दूर भागती है और उसकी तरफ से मुँह मोड़ लेती है। उसका संगी कोई नहीं रहता, उसका पथ-प्रदर्शक कोई नहीं बनता और वह एक अवधि पूरी होने तक पाप की पराकाष्ठा में एकाकी भ्रमण करती रहती है। जब वह अवधि पूरी हो जाती है तो वह अनिवार्यतः उसके योग्य योनि में लाई जाती है।"

यहाँ तक सुकरात ने आत्मा की सद्गति और दुर्गति का जो वर्णन किया है, वह अधिकांश आस्तिक व्यक्तियों को मान्य होगा। यह ख्याल करना कि प्रत्येक व्यक्ति मरने के बाद तुरंत ही दूसरा जन्म ले लेता है बहुत बुद्धिसंगत नहीं जान पड़ता। अभी तक हमने भूत-प्रेतों के उपद्रवों के तथा पुनर्जन्म की याद रखने वाले बालक-बालिकाओं के जो वर्णन सुने और पढ़े हैं। यदि उनका एक शतांश भी सत्य हो तो यह मानना पड़ेगा कि अनेक अपराधी व्यक्तियों की आत्माएँ मरने के उपरांत इधर-उधर भटकती रहती हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और स्वयं अपने दुष्कर्मों का दंड सहन करती हुई कभी-कभी अन्य लोगों को भी आतंकित करती रहती हैं। यदि यह सत्य है कि पाप और पुण्य कर्मों का प्रतिफल मानव आत्मा को भिन्न रूपों में प्राप्त करना होता है, तो निश्चय ही हमको परलोकगत आत्माओं की भली-बुरी स्थिति की बात स्वीकार करनी ही होगी।

जैसा हम पहले भी कह चुके हैं, आत्मा का परलोक गमन और वहाँ पर पाप और पुण्य कर्मों का फल भोगना विशुद्ध हिंदू शास्त्रों का सिद्धांत है। पुराणों में ही नहीं, समस्त ब्रह्मविद्या का सार मानी जाने वाली 'भगवद् गीता' में भी इसका स्पष्ट वर्णन पाया जाता है—

अनेक चित्तविभ्रांता मोहजालसमावृताः।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ।।
आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्।।
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः।।
तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु।।
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्।।

(गीता अ० १६, श्लोक १६ से २०)

अर्थात्—"ऐसे आसुरी प्रकृति के व्यक्ति (दुष्ट लोग) तरह-तरह की कल्पनाओं में भूले हुए, मोह के फंदे में फँसे हुए और विषयोपभोग में आसक्त होकर अपवित्र नरक में गिरते हैं। ये लोग आत्म-प्रशंसा करने वाले, घमंड दिखलाने वाले, धन और नामवरी के मद से भरे हुए, जो दान-यज्ञ आदि करते हैं, वह भी शास्त्र-विधि से विपरीत केवल अपनी शान दिखलाने के उद्देश्य से होता है।"

"वे लोग यह नहीं मानते कि ईश्वर सब प्राणियों में व्याप्त है, इसलिए अहंकार, बल, दर्प, काम, क्रोध से फूलकर अन्यों के प्रति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

द्वेष-भाव रखते हैं। अशुभ कर्म करने वाले इन द्वेषी और क्रूर व्यक्तियों को मैं संसार की आसुरी अर्थात् पाप-योनियों में सदैव ही पटकता रहता हूँ। इस प्रकार जन्म-जन्म में आसुरी योनि को ही पाकर, ये मूर्ख मुझे बिना पाये अंत में अत्यंत अधोगति को प्राप्त हो जाते हैं।"

गीता के विवेचन को पढ़कर और उससे सुकरात के वक्तव्य का मिलान करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि पृथक् समझे जाने वाले विविध धर्म सिद्धांतों के वास्तविक स्वरूप में कोई खास अंतर नहीं है। धार्मिक और सांप्रदायिक मतभेदों का मूल कारण मनुष्यों की हठधर्मिता अथवा अहंकार ही होता है। यदि कोई मजहब यह कहता है कि दुष्टतापूर्ण कामों का बुरा प्रतिफल नहीं मिलता, तो उसे 'धर्म' कहने के बजाय किसी स्वार्थी का मनमाना 'सिद्धांत' ही कहना अधिक उचित होगा।

आगे चलकर सुकरात ने जनश्रुतियों के आधार पर (१) ओकिआनास, (२) एकरान, (३) पैरिफ्लैगिथान और (४) कोकूतास नाम की परलोक में बहने वाली चार नदियों और 'तारतौरस' नामक सर्वापेक्षा वृहद् और भयंकर जलाशय का वर्णन किया है। यह उसी प्रकार का है जैसा कि हमारे पुराणों में वैतरणी नदी और रौरव आदि नरक-प्रदेशों का वर्णन मिलता है। यह काफी विस्तारयुक्त और मनोरंजक है, पर उसको हम विशेष महत्त्व नहीं देते। स्वयं सुकरात ने भी अपने वक्तव्य के अंत में कह दिया है—

"किसी बुद्धिमान् व्यक्ति को यह नहीं कहना चाहिए कि आत्मा और उसके आवास का जो वर्णन मैंने बतलाया है, वह यथातथ्य सत्य है। मैं भी इस विषय में अधिक निश्चिंत नहीं हूँ। परंतु इतना मैं कहता हूँ कि आत्मा की अमरता सिद्ध हो जाने पर, यदि मैं यह सोचने का साहस करूँ, कि इसी प्रकार का परलोक का कोई वर्णन सत्य है, तो इसमें कोई अनुचित अथवा अशिष्ट बात नहीं है।"

वास्तव में इस प्रकार के वर्णन अनुमान और कल्पना पर ही आधारित होते हैं। इसलिए उनको 'कथा' की श्रेणी में रखा जाता है। निश्चय ही सुकरात हमारे धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने अब से ढाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हजार वर्ष पूर्व भारतीय धर्म-सिद्धांतों के प्रतिपादन में इस प्रकार सहयोग दिया। यह आत्मज्ञान का विषय बड़ा गूढ़ और साथ ही महत्त्वपूर्ण भी है। इससे जीवन की कितनी ही गुत्थियाँ सुलझती हैं और मनुष्य को सत्कर्मों की प्रेरणा मिलती है ? सुकरात ने जो कुछ कहा है, वह इस संसार से प्रयाण करने का पूर्ण निश्चय हो जाने पर, और एक जीवन्मुक्त महामानव की तरह मृत्यु का स्वागत करते हुए कहा है। इसलिए उसके कथन में दूसरों की अपेक्षा अधिक सत्याश होना स्वाभाविक ही है।

सुकरात, यद्यपि बाह्य दृष्टि से हमारे लिए एक विदेशी तथा अन्य जातीय थे, आंतरिक दृष्टि से वे हमारे सच्चे, 'सहधर्मी और 'सजातीय' माने जायेंगे। तुलसीदास जी ने लिखा है—

जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही।।

इस सिद्धांत के अनुसार हमारे जो भाई-बंधु असत्य की, स्वार्थपरता की, हिंसा और द्वेष की मनोवृत्ति रखते हैं और अन्य लोगों के साथ वैसा ही आचरण करते हैं, वे वास्तव में हमारे बंधु नहीं हैं। और सुकरात के समान व्यक्ति जिसने सत्य की रक्षा और समाज-सेवा के लिए प्राण दे दिये और जिसने अंत समय तक ईश्वर की सत्ता और आत्मा की नित्यता (अमरता) पर दृढ़ विश्वास रखा, वही हमारा सच्चा साथी और सखा हो सकता है। उसके उदाहरण को देखकर हम आज भी अपने ईश्वरीय विश्वास दृढ़ कर सकते हैं और यही वास्तव में आत्मा का कल्याण-साधन कर सकता है।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org